D1 11/5

मोहेंजोदड़ो का संक्षिप्त विवरण

यह सिन्धु नदी के पूर्वी किनारे पर है और सिन्धु के मुख्य प्रवाह तथा पश्चिमी धारा के मध्य ऐसे क्षेत्र में है जो सदा बाढ़ से क्षतिग्रस्त होता रहा है और आज भी होता रहता है। मोहेंजोदड़ो का अर्थ सिंधी भाषा में "मृतकों का टीला" है। यद्यपि यह एक प्राचीन स्थान के रूप में पहले से ही ज्ञात था, 1922 में राखालदास बनर्जी को पुरैतिहासिक स्वरूप का परिचय दिलाने का श्रेय मिला। यह उत्खनित सिन्धु नगरों में से सबसे महत्वपूर्ण और सम्पन्न नगर है। राखालदास बनर्जी इस ध्वस्त नगर के शीर्ष पर बने कुषाण-कालीन स्तूप का उत्खनन करा रहे थे तो उन्हें स्तूप के नीचे कुछ विशिष्ट प्रकार की मुद्राएं और अन्य सामग्री प्राप्त हुई। सिन्धु सभ्यता के इस महत्वपूर्ण नगर के सांस्कृतिक कोष का उद्घाटन करने के लिए मार्शल के नेतृत्व में 1922 से 1930 तक खोदाई कराई गई। जिन पुराविदों के निरीक्षण में उत्खनन कार्य सम्पन्न हुआ उनमें राखालदास बनर्जी मजुमदार, काशीनाथ दीक्षित, हारग्रीव्ज, दयाराम साहनी और माधोसरूप वत्स के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। यहाँ नगर निर्माण के कम से कम नौ चरण मिले। नगर निर्माण योजना, भवन, मृद्भाण्ड, मुहरें तथा अन्य कलाकृतियाँ सभी अत्यन्त विकसित सभ्यता की सूचक थी। कुछ साल बाद मकाय के नेतृत्व में इस स्थान पर फिर खुदाई हुई। फिर सर मार्टिमर व्हीलर ने, मुख्य रूप से इस बात का पता लगाने के लिए कि मोहनजोदड़ो के जलमग्न स्तरों में किस तरह की सामग्री

P.T.O. —

छिपी पड़ी है। 1950 में यहाँ पर सीमित उत्खनन कराया। व्हीलर ने जल-तल के नीचे की लगभग तीन मीटर खोदाई कराई। 1964 और 1966 में अमेरिका के पुराविद् डेल्स ने अप्रयुक्त स्तरों तक पहुँचने के उद्देश्य से मोहनजोदड़ो में उत्खनन कराया।

इस क्षेत्र में आवास स्तरों की मोटाई लगभग 6.8 मीटर पायी गयी। इसमें से नीचे का भाग जो लगभग पूरे का तिहाई है जलमग्न है। इन जलमग्न स्तरों से मृद्भाण्ड व अन्य वस्तुएं मिली हैं। ये पुराविदों के अनुसार बलूचिस्तान की संस्कृतियों के मृद्भाण्डों से बहुत-कुछ मिलती जुलती हैं। ये उसी तरह की हैं जैसे की हड़प्पा में सुरक्षात्मक प्राचीर के निर्माण से पूर्वकाल में पाई गयी हैं।

समाप्त

Next - पंजाब)

हड़प्पा